वर्ष- 2, अंक - 3, मार्च 2018

आर. एन. आई. पंजीकरण क्रमांक

जे-7, श्रीरामनगर, रायपुर (छ.ग.)

CHHHIN/2017/72506

किलोल

संपादक - डा. आलोक शुक्ला
सह-संपादक - एम. सुधीश

संपादक मंडल -
राजेंद्र कुमार विश्वकर्मा , शेख अजहरुद्दीन

प्यारे बच्चों,

आप सभी को होली बुहत मुबारक हो. सब मिलकर खूब मज़े से होली मनाओ. हां यह ध्यान अवश्य रखना कि ऐसे ही रंगों का उपयोग किया जाये जो आपके लिये हानिकारक न हों. रंगों का यह त्योहार मित्रता का त्योहार भी है. इस दिन सभी लोग पुराने गिले शिकवे मिटाकर आपस में गले मिलते हैं. बच्चों इस अंक से हम एक नई शुरुवात कर रहे हैं. इस अंक में एक अधूरी कहानी दी गई है. अपको यह कहानी पूरी करके हमे भेजना है. सभी अच्छी कहानियां अगले अंक में प्रकाशित की जायेंगी. अब आपकी परीक्षाएं भी पास आ गई हैं. त्योहार मना कर सभी पढ़ाई में जुट जाइये. हमेशा की तरह यह अंक भी http://alokshukla.com/Books/BookForm.aspx?Mag=Kilol पर नि:शुल्क डाउनलोड के लिये उपलब्ध है. सभी से पुन: अनुरोध है कि किलोल के लिये सामान्य ज्ञान, विज्ञान के खेल, संस्मरण, चुटकुले कहानी और पहेलियां dr.alokshukla@gmail.com पर ई-मेल व्दारा भेजें. बच्चों को प्यार.

आलोक शुक्ला

<u>नमक और बेटी</u>

लेखिका - कु.राजेश्वरी मरपच्ची, नवापारा कर्रा विकासखंड पाली जिला कोरबा

एक बहुत बड़ा महल था. उसमे एक राजा और उसकी रानी अपनी तीन बेटियों के साथ रहते थे. एक दिन राजा ने अपने अपनी तीनो बेटियों से पूछा -"तुम तीनों मुझे कितना प्यार करते हो?" सबसे बड़ी बेटी ने कहा - "मैं आपसे बहुत प्यार करती हूं." दूसरी बेटी ने भी यही कहा. सबसे छोटी बेटी ने कहा- मैं आपसे नमक जितना प्यार करती हूं. राजा को बहुत गुस्सा आया. राजा ने अपने सैनिकों को कहा - "इसे महल से बाहर निकाल दो." सैनिकों ने उसे महल से निकाल कर घने जंगल में छोड़ दिया. कई महीने बीत गए. एक दिन राजा शिकार करते - करते उस जंगल की तरफ चला गया. उसने सोचा आज रात यहीं पर रुक जाता हूं. राजा एक झोपड़ी के पास गया. उस झोपड़ी में उसकी बेटी रहती थी. अपने पिता को देखकर उसको बहुत खुशी हुई. उसने बहुत सारे पकवान बनाए, लेकिन किसी में भी नमक नहीं डाला. राजा ने जब खाना खाया तो उसमें नमक नहीं था. राजा ने अपनी बेटी से कहा - "खाने में नमक नहीं लगा है" उसकी बेटी ने उत्तर दिया - "जैसे नमक बिना खाना अधूरा है, वैसे ही मैं आपके बिना अधूरी हूं" राजा को अपनी गलती का अहसास हुआ. वह अपनी बेटी को अपने साथ महल ले गया और सभी हंसी खुशी रहने लगे.

<u>घमंडी सियार और चतुर चींटी</u>

लेखिका - कुमारी रुबीना नवापारा कर्रा पाली जिला कोरबा छत्तीसगढ़

एक जंगल में दो मित्र थे - एक चींटी और एक सियार. दोनों के बीच भाई बहन जैसा प्यार था. चींटी बहुत चतुर थी और सियार बहुत घमंडी था. चींटी सियार को अपनी चतुराई से हर बात में हरा देती थी. इस कारण सियार चींटी से जलने लगा. तब सियार के मन में चींटी को मारने का ख्याल आया. सियार एक योजना बनाकर चींटी को जंगल में घुमाने ले गया. जंगल में सियार ने प्यास लगने का बहाना बनाया. जब चींटी और सियार पानी पीने गए तो सियार ने चींटी को पानी में धक्का दे दिया. चींटी नदी में बहने लगी और जोर बचाओ-बचाओ से चिल्लाने लगी. नदी में बहते-बहते चींटी एक पत्ते पर चढ़ गई और किनारे तक आ पहुंची. अब चींटी उस जंगल को छोड़कर बहुत दूर चली गई और सियार जंगल में अकेला रह गया. सियार को दोस्त की कमी महसूस होती थी. उसे लगा कि वह अपनी दोस्त चींटी के बिना अधूरा है. उसे अपनी गलती का अहसास देर से हुआ. अब पछताए होत क्या जब चिड़ियां चुग गईं खेत.

कहानी पूरी करो

हम यहां पर आपको एक अधूरी कहानी दे रहे हैं. इसे पढ़कर आगे की कहानी लिखो और जल्दी से हमे भेज दो. अच्छी कहानियां हम अगले अंक में प्रकाशित करेंगे.

दो बकरियाँ

लेखिका - पुष्पा शुक्ला

जंगल में एक नाला था. नाले के पास ही दो बकरियां रहती थीं एक काली एक भूरी. नाले के किनारे हरी-हरी घास लगी थी. दोनों बकरियाँ रोज वहाँ घास चरने जाती थीं. एक दिन भूरी बकरी नाले के किनारे घास चर रही थी. काली बकरी वहाँ नहीं आई थी. वह आज दूसरे किनारे पर घास चरने चली गई थी. भूरी बकरी ने इधर - उधर देखा. फिर उसने नाले कि दूसरी तरफ देखा. बकरी ने सोचा - उस किनारे कि घास का रंग कितना हरा है ! वह घास नरम भी होगी. क्यों न आज उस किनारे चलूँ !

नाला गहरा था. भूरी बकरी किनारे - किनारे चलने लगी. एक जगह नाले पर पेड़ गिरा पड़ा था. पेड़ से नाले पर पुल - सा बन गया था. बकरी उस पुल पर चलकर

नाला पार करने लगी. जैसे ही वह पुल पर कुछ दूर आगे बढ़ी, उसने देखा कि पुल कि दूसरी ओर से काली बकरी इधर ही आ रही है.

भूरी बकरी ने पूछा -"बहन, तुम कहाँ से आ रही हो ?" काली बकरी ने कहा - "मैं आज उस किनारे गई थी अब वापस जा रही हूँ." भूरी बकरी बोली - "बहन,यह पुल तो बहुत संकरा है. इस पुल से तो हम दोनों साथ - साथ नहीं निकल सकतीं. अब क्या करें ?"

बच्चों अब तुम ही सोचो कि उस सकरे पुल से दोनों बकरियाँ कैसे निकली होंगी और जल्दी से हमें लिख भेजो आगे कि कहानी.

चित्र देखकर कहानी लिखो

पिछले अंक में हमने कहानी लिखने के लिये यह चित्र प्रकाशित किया था -

इस चित्र पर प्राप्त कहानी हम यहां प्रकाशित कर रहे हैं -

सुखीराम

लेखक - दिलकेश मधुकर

सुखीराम का आज विद्यालय में पहला दिन था. वह बहुत दुखी और उदास था. वह शहर के महंगे स्कूल में पढ़ना चाहता था. उसके सभी मित्र वहीं पढ़ रहे थे. परंतु उसके पिताजी बहुत गरीब थे, इस कारण वे उसे शहर में नहीं पढ़ा सकते थे. उन्होंने सुखीराम को गांव के सरकारी स्कूल में भर्ती कराया था. सुखीराम का कोई मित्र भी नहीं था. वह चुपचाप कक्षा में बैठा था. तभी स्कूल के शिक्षक मधुकर जी कक्षा में आये और उन्होने सभी बच्चों को मुफ्त किताबें और गणवेश के साथ

टाई, बेल्ट और जूते - मोजे भी बांटे. यह चीज़ें पाकर सुखीराम खुश हो गया. फिर गुरुजी ने बताया कि आज विद्यालय में चित्रकला सिखाई जायेगी. इसे सुनकर सुखीराम बहुत खुश हुआ, क्योंकि उसे चित्र बनाना बहुत अच्छा लगता था. उसने झट से रंग और ब्रश लेकर दीवार पर चित्र बनाना शुरु कर दिया. उसने बहुत सुंदर चित्र बनाया, जिसे देखकर विद्यालय के सभी शिक्षक और बच्चे उसकी बहुत तारीफ करने लगे. अपनी तारीफ सुनकर सुखीराम बहुत प्रसन्न हुआ.

अब नीचे दिया चित्र देखो. यह चित्र हमे कविता कोरी जी ने भेजा है. क्या इस चित्र को देखकर तुम्हे कोई कहानी याद आती है. अपनी कहानी हमे तुरंत लिख भेजो अच्छी कहानियां हम अगले अंक में प्रकाशित करेंगे -

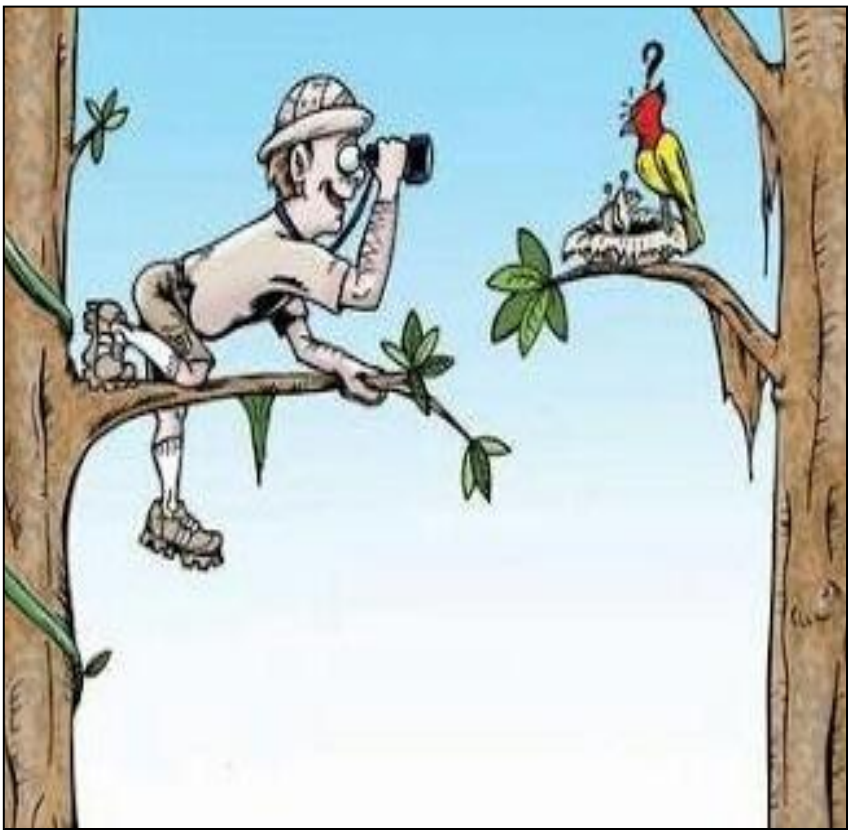

आगे होरी तिहार

लेखक - रघुवंश मिश्रा

उड़थे धुर्रा गुलाल रे

आगे-आगे होरी तिहार रे।

बड़े बिहनिया ले टोली बनाके ।

किसम-किसम के मुखौटा लगाके।।

रंग के करें बउछार रे...

जगह-जगह म बाजे नगाड़ा।

गली-गली ह बनगे अखाड़ा।।

चारों तरफ मचे रार रे...

एक - दूसर ल लगाके गुलाल।

पुछत लागिन हाल-चाल।।

भरें हे मन म दुलार रे ...

फूले हे टेसू चारो ओर ।

मन के उमंग ह मारे जोर ।।

हिरदय में खुशी अपार रे ...

आगे-आगे होरी तिहार रे ।।

कोयल

लेखिका - पुष्पा शुक्ला

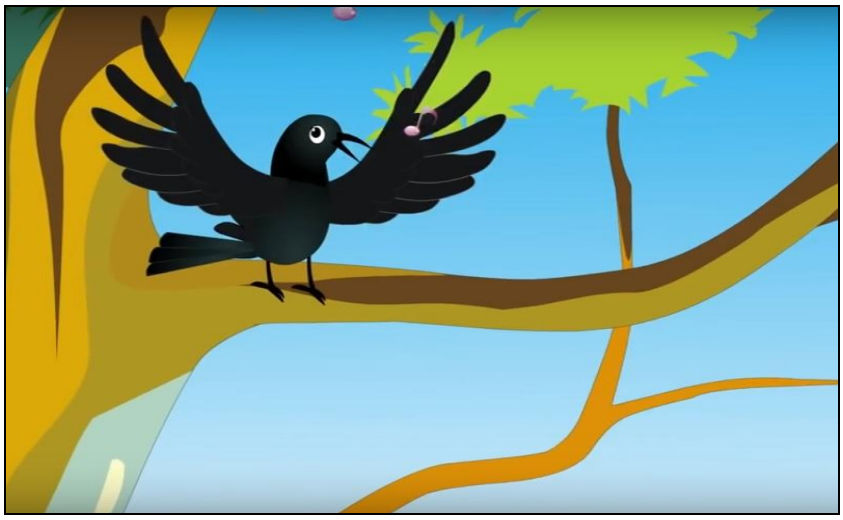

काली कोयल बोल रही है

डाल-डाल पर डोल रही है |

कुहू-कुहू का गीत सुनाती

कभी नही मेरे घर आती |

आमों कि डाली पर गाती

बच्चों के दिल को बहलाती |

कूक-कूक कर किसे बुलाती

क्या अम्मा की याद सताती ?

यदि हम भी कोयल बन जाते

उड़ते फिरते, गीत सुनाते |

<u>जग में नाम कमाना है</u>

लेखिका - कविता कोरी

लो आ गई परीक्षा,
जितनी भी ली शिक्षा-दीक्षा,
अब उसको बतलाना है,
जग में नाम कमाना है ||

शिक्षा,कौशल और अभ्यास,
जितने भी हैं किये प्रयास,
अब सबको दिखलाना है,
जग में नाम कमाना है ||

रुकें नहीं दिन हो या रात,
जब तक लक्ष्य न लेते साध,
मुट्ठी में सारा ज़माना है,
जग में नाम कमाना है ||

Yes Papa

Author – Dilkesh Madhukar

Sweety, Sweety
Yes Papa.
Wake in the Morning
Yes Papa.
Brushing Teeth
Yes Papa.
Bathing Today
Yes Papa.
Cutting nails
Yes Papa.
Nice Clothes
Yes Papa.
Reading Books
Yes Papa.
Going to School
Yes Papa.
Telling Lies
No Papa.
Doing Well
Yes Papa.

Idiom – मुहावरे - हाना

संकलनकर्ता - दिलकेश मधुकर

अंग्रेज़ी में इन्हें ईडियम कहा जाता है, हिन्दी में मुहावरा और छत्तीसगढ़ी भाषा में हाना. इनका उपयोग बोलचाल में अक्सर होता है. यहां कुछ मज़ेदार ईडियम-मुहावरे-हाना उनके अर्थ के साथ दिये गये हैं. तुम अपनी बोलचाल की भाषा में इनका उपयोग करके देखो -

1. Might is right.
   जिसकी लाठी उसकी भैंस
   जेकर लाठी तेकर भइस
   जो ताकतवर होता है, उसी की बात माननी पड़ती है

2. It is no use crying over spilt milk.
   अब पछताए होत क्या, जब चिड़िया चुग गई खेत
   पूरा के नहके ले पार बांधय
   कुछ होने के बाद उस पर पछतावा नहीं करना चाहिए

3. When is Rome do as Romans do.
   जैसा देश वैसा भेष
   जइसन देश वइसन भेष
   जगह के अनुसार रहना चाहिए

4. As you sow so shall you reep.
   जैसा बोओगे वैसा काटोगे
   जइसे बोईही वइसे लुईही
   कर्म के हिसाब से ही फल मिलता है

5. A bad workman blames his tools.
   नाच न जाने आंगन टेढ़ा
   सरहा मुड़ी नाऊ ल दोष
   अपनी कमी से कुछ ना कर पाने का दोष अन्य लागों पर देना

6. Tit for tat.
   जैसे को तैसा
   जइसन ल तइसन
   अच्छे के साथ अच्छा और बुरे के साथ बुरा करना

7. Diamonds cut diamonds.
   लोहा लोहे को काटता है
   सगा सगा ले नइ जुड़ाए
   शक्तिशाली को शक्तिशाली ही हरा सकता है

8. A figure among ciphers.
   अंधों में काना राजा
   अंधरा मन के कनवा राजा
   कम बुध्दिमान लोगों में कुछ बुध्दि रखने वाला व्यक्ति

9. A Drop in the ocean.
   ऊंट के मुंह में जीरा
   हाथी के पेट सुहारी म नइय भरय
   जहां ज्यादा जरूरत हो वहां बहुत कम होना

10. As the king so are the subjects.
जैसा राजा वैसी प्रजा
जइसन गुरु तइसन चेला
जैसा नेतृत्व होगा वैसे ही अनुयायी होंगे

11. Barking dogs seldom bite.
जो गरजते हैं वो बरसते नहीं ।
जेन गरजथे तेन बरसय नइय
जो ज्यादा बोलते हैं वह कुछ करते नहीं हैं

12. It takes two to make a quarrel.
एक हाथ से ताली नहीं बजती
एक हाथ म ताली नइय बाजय
विवाद दोनों पक्षों की कुछ ना कुछ गलती होती है

सामान्य ज्ञान

गूगल की मदद से खोजा गया नया सौर मंडल

संकलन कर्ता - डोमेन कुमार बढ़ई

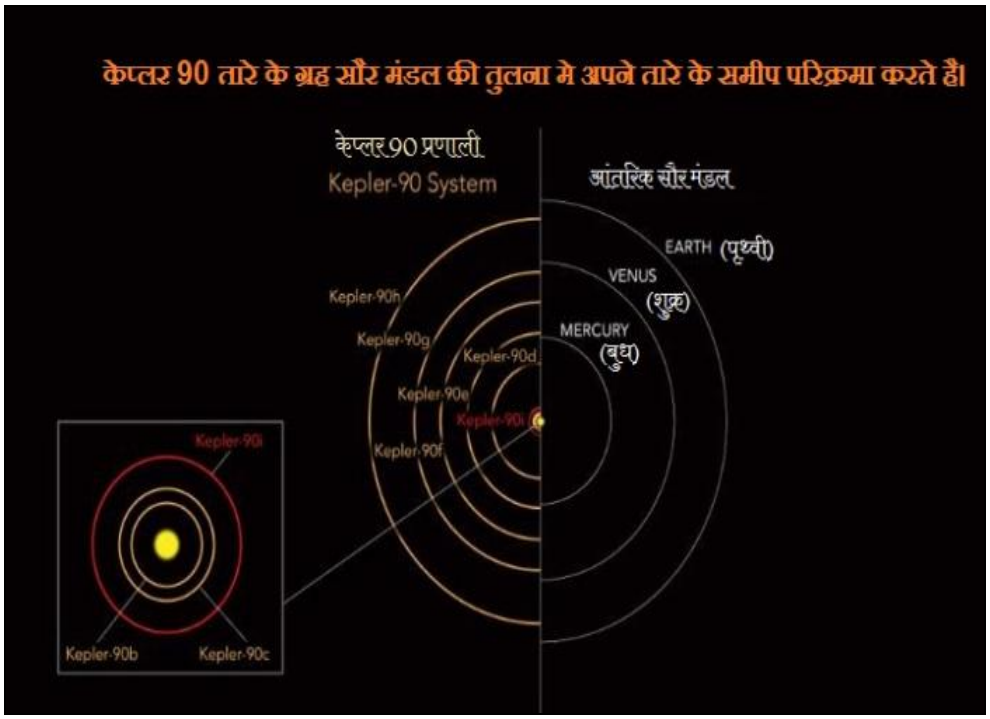

नासा ने गूगल आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की मदद से पहली बार हमारे सौर मंडल जैसा ही आठ ग्रहों वाला एक और सोलर सिस्टम खोज निकाला है. यह सौर मंडल धरती से करीब 2,545 प्रकाश वर्ष दूर है. वैज्ञानिकों ने नए सौर मंडल का नाम केपलर - 90 रखा है. यह हमारे सौर मंडल का पथरीला ग्रह है जो हर 14.4 दिनों में अपने तारे की परिक्रमा पूरी करता है. नासा के शोधकर्ताओं ने इस खोज को गूगल की मदद से मशीन learning के जरिए अंजाम दिया है. मशीन learning आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का हिस्सा है जो केप्लर टेलीस्कोप के आकड़ो का विश्लेषण करता है. दिलचस्प है कि केपलर - 90 के ग्रहों की व्यवस्था हमारे सौर मंडल जैसी ही है. इसमें भी छोटे ग्रह अपने तारे से नजदीक है, और बड़े ग्रह उससे दूर हैं.

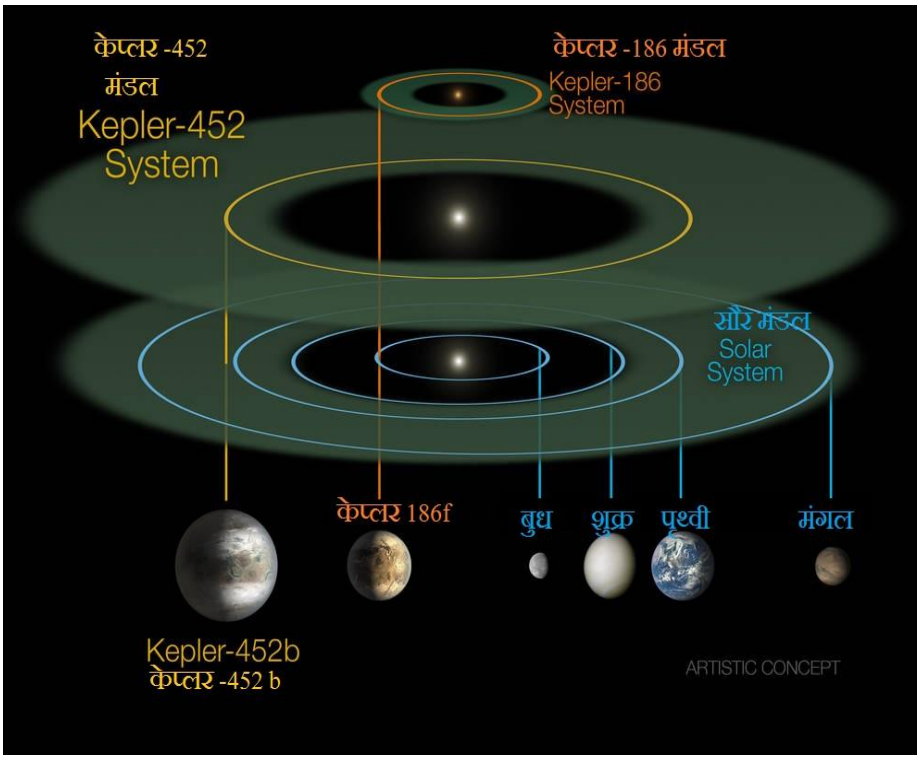

वैज्ञानिकों के मुताबिक, इस खोज से पहली बार साफ होता है कि दूर के सौरमंडल में हमारे जैसे ही ग्रह और उपग्रह मौजूद हो सकते हैं. केप्लर स्पेस टेलीस्कोप को 2009 में लांन्च किया गया था. इसके लांन्च होने के बाद करीब डेढ़ लाख तारों को स्कैन किया गया है. केप्लर डाटा के जरिए अब तक 2,500 ग्रहों की खोज की जा चुकी है.

कला

माचिस तीली से आकृति बनाना

लेखक - दिलकेश कुमार मधुकर

उद्देश्य - कलात्मक शैली का विकास करना.

सामग्री - माचिस की तीलियां.

गतिविधि/क्रिया - माचिस की बहुत से डिब्बे में से तीलियों को बाहर निकाल कर आवश्यकता के अनुसार विभिन्न गणितीय, अक्षर, अंक, चित्र बनाते हैं. इससे पहेली खेल भी खेल सकते हैं.

आओ हंस लें

संकलनकर्ता - कु. रेणुका सलामे, प्रा. शा. बोरिया मोकासा (मानपुर)

दिनेश - अरे यह सड़क के किनारे के पेड़ क्यों काटे जा रहे हैं
विजय - मंत्री जी आ रहे है इसलिए
दिनेश - मंत्री जी के आने और पेड़ काटने में क्या संबंध है
विजय - है क्यों नहीं, मंत्री जी वहाँ वृक्षारोपण जो करने वाले हैं

सोनू - डॉक्टर से - डॉक्टर अंकल जरा पावर वाला चश्मा देना
डॉक्टर - तुम्हारी आंख तो ठीक है फिर किसके लिए
सोनू - मैडम जी के लिए
डॉक्टर - क्यों बेटे
सोनू - क्योंकि मैं उन्हें गधा दिखाई देता हूं

क्लास में पढाते पढ़ाते मास्टर साहब ने एक लड़के से कोई सवाल किया उसे जवाब मालूम नहीं था. उसने दूसरे लड़के से आहिस्ता से पूछने की कोशिश की. दूसरे लड़के ने पहले के कान मे कहा - मास्टर साहब तो गधे हैं. मास्टर साहब चिल्लाकर बोले - तू क्यों बताता है,क्या उसको नहीं मालूम.

बिट्टू की नानी ने कहा - बिटटू जल्दी से मुँह धो लो, मैं तुम्हें दो बिस्कुट दूंगी
बिटटू ने पूछा - यदि मैं हाथ पैर भी धो लूं तो
नानी - तो मै तुझे चार बिस्कुट दूंगी
बिट्टू - ठीक है आप पूरा पैकेट तैयार रखिए, मै नहा कर आ रहा हूं

विज्ञान के खेल

पानी पर तैरती सुई

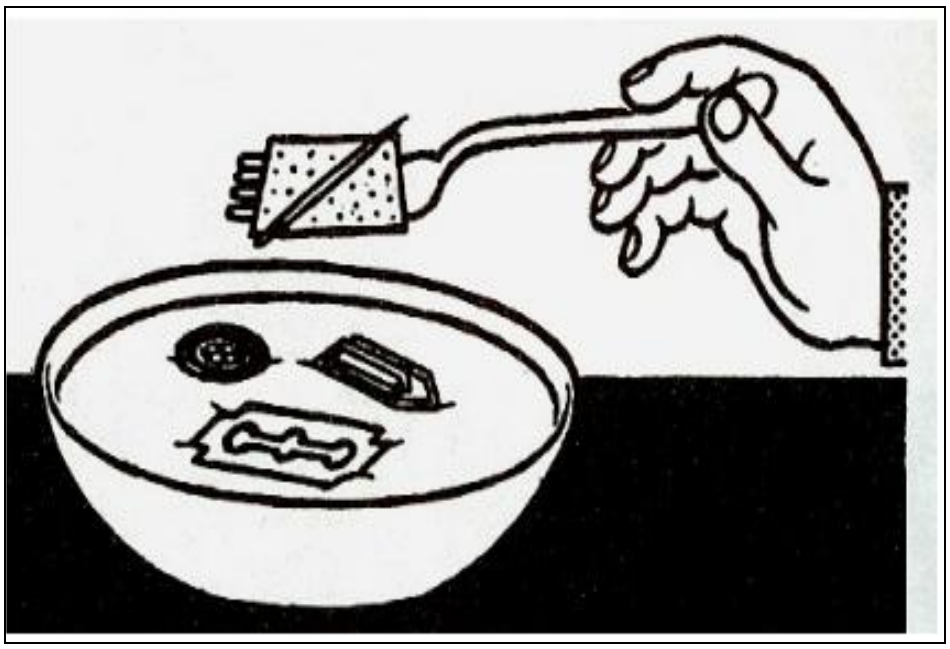

क्या तुम धातु की सुई को पानी पर तैरा सकते हो ? एक सोख्ता कागज (ब्लाटिंग पेपर) का टुकड़ा लो और उसपर एक सुई रखकर एक कांटे अथवा चम्मच की सहायता उसे धीरे से पानी की सतह पर तैरा दो. अखबार के कागज़ का उपयोग भी किया जा सकता है. तैरता हुआ सोख्ता कागज थोड़ी देर में पानी सोख कर भारी हो जाएगा और नीचे डूब जाएगा, पर सुई तैरती रहेगी. ऐसा कैसे हुआ? जो सुई अपने भार के कारण पानी में डूब जाती है, अब कैसे तैर रही है. इसका यह है कि पानी की सतह एक महीन खिंची हुई झिल्ली की तरह है. अगर इसे छेड़ कर तोड़ा न जाए तो यह झिल्ली एक गुब्बारे की तरह फैल और सिकुड़ सकती है. यह तनी हुई झिल्ली अपने ऊपर छोटी हल्की चीजों को उठा भी सकती है, इसीलिये इसने सुई को उठा लिया. पानी की सतह के इस तनाव को पृष्ठ तनाव या Surface tension कहते हैं. यह तनाव पानी में साबुन डालकर खत्म किया जा सकता है.

वर्ग पहेली

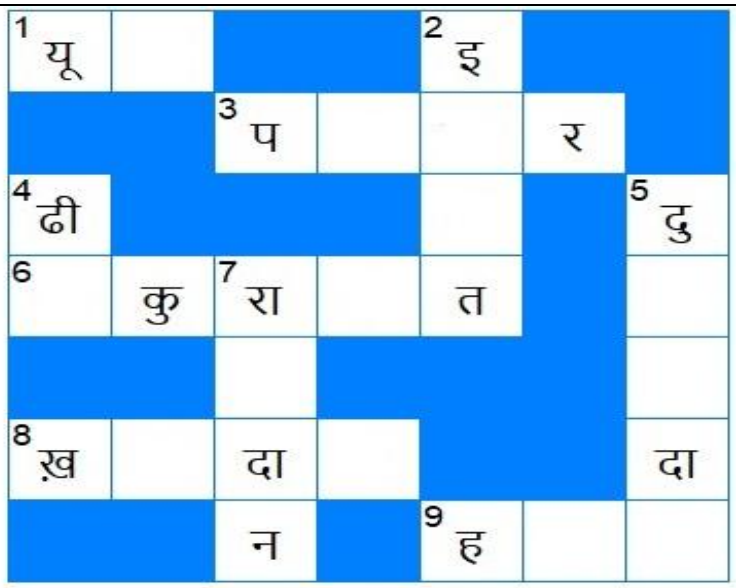

बाएँ से दाएँ

1. युवा वर्ग 3. वृत्त गोलाई खींचने का उपकरण 6. ठाकुर होने का भाव 8. ख़रीददारी 9. हज़ार सिपाहियों का सरदार, मुग़ल शासन में सरदारों को दिया जाने वाला एक ओहदा.

ऊपर से नीचे

2. जिनके अंत में 'इ' हो 4. धृष्टता करने वाला 5. व्यवहार-कुशलता या लोकचातुरी 7. रहस्य जानने वाला

उत्तर